आध्यात्मिकता और भारतीय संगीत का संबंध

रजनी गुप्ता
(शोध छात्रा)
ललित कला एवं संगीत विभागदी0द0उ0
गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।

सारां ाः—

संगीत उतना ही प्राचीन माना गया है जितनी कि मावन जाति। मनुश्य के जन्म संस्कार से लेकर मृत्यु संस्कार तक संगीत का प्रवाहमान रहता है। इस प्रकार संस्कृति, आध्यात्मिकता से संगीत का परस्पर धनिश्ठ सम्बंध है। भारतीय संगीत का सम्बंध आध्यात्मिकता के साथ परस्पर रहा है। भारतीय संगीत की उत्पत्ति का आधार वेद माने गये है। प्राचीन काल से ही वेदों का अध्यात्किता से धनिश्ठ संबंध स्थापित रहा है। भारत में संगीत क्षणिक आमोद प्रमोद व अतृप्त तृश्णा की वस्तु ना होकर समस्त ब्रह्मांड अथवा व्यक्ति जगत से एकरूपता का आभास है। चिरानन्द प्रदान करने वाली अध्यात्मिक साधना है। जो ध्यान और साधना हमें अध्यात्मिकता की ओर ले जाती है, उसी ध्यान और साधना के अनुसरण की आव यकता भारतीय संगीत में भी होती है। वैदिक युग से आधुनिक युग तक आध्यात्मिक तत्व भारतीय संगीत एक दूसरे से जुड़ा है, अतः कल से एक लम्बी यात्रा करते हए आज तक भाुद्ध सरिता की भांति, आध्यात्मिक तत्व' एवं 'संगीत' बहता चला आ रहा है। और निःसंदेह आने वाले कल तक यूंही बहता रहेगा।

प्रस्तावनाः—

'आध्यात्मिकता' ई वरीय उद्दीपन की अनुभूति प्राप्त करने का एक दृश्टिकोण है, जो धर्म से अलग है। आध्यात्मिकता को, ऐसी परिस्थितियों में अक्सर धर्म की अवधारणा के विरोध में रखा जाता है, जहां धर्म को संहिताबद्ध, प्रामाणिक कठोर, दमनकारी, या स्थिर के रूप में ग्रहण किया जाता है, जबकि अध्यात्म एक विरोधी स्वर है, जो आम बोलचाल की भाशा में स्वयं आविश्कृत प्रथाओं या वि वासों को द र्ाता है, अथवा उन प्रथाओं और वि वासों को, जिन्हें बिना किसी औपचारिक निर्दे ान के विकसित किया गया है। इसे एक अभैतिक वास्वविकता के अभिगम के रूप में उल्लेखित किया गया है, एक आंतरिक मार्ग जो एक व्यक्ति को उसके अस्तित्व के सार की खोज में सक्षम बनाता है, या फिर "गहनतम मूल्य और अर्थ जिसके साथ लोग जीते हैं।" आध्यात्मिक व्यवहार, जिसमें ध्यान, प्रार्थना और चिंतन भाामिल है, इसी ध्यान, प्रार्थना और चिंतन के अनुसरणकी आव यकता भारतीय संगीत में भी होती है। संगीत मानव की चंचल मनवृतियों को नियंत्रित करता हैं संगीत के स्वर व लय मन को एकाग्रह करके इतना अधिक लोग तथा स्थिर कर देते है। कि हृदय की समस्त चंचल वृतियां भाांत होकर, आत्मा को परमात्मा में लीन करा देती है। और तभी मानव आध्यात्मिक प्रक्रिया से जुड़ जाता है।

आध्यात्मिक प्रक्रिया के वैसे तो उनके तरीके हैं, इनमें संगीत सबसे ज्यादा अहम है। संगीत के आदि गुरू भगवान सदा ाव थें। संगीत में गीत, नृत्य और वाद्य तीनों का समन्वय हैं तीनों के संयोजन को ही संगीत कहते हैं। पहले हमें गीत भाब्द के बारे में जानना चाहिए। गीत भाब्द गै धातु और क्व प्रत्यय के योग से बना है। इसका अर्थ है गा कर आंतरिक भाव को प्रकट करना। इसलिए साधना में संगीत का संतुलन आव यक है। साधक लोग संगीत के व्यावहारिक संतुलन के माध्यम से ही मूल कारण अर्थात परम पुरूश की ओर जाते हैं। इस संतुलन का अर्थ है— सभी कुछ इस तरह बना लेना कि वह ग्रहण योग्य हो। जैसे दाल में छौंक लगाते हैं तो उस समय ध्यान रखा जाता है कि यह ना ज्यादा कड़ुवा हो, ना मीठा हो और न ही तीखा हो, यानी यह संतुलित हो। ठीक उसी तरह भगवान सदा ाव ने जब अध्यात्म विद्या का प्रचलन किया, तभी उन्होंने यह महसूस किया कि जो व्यक्ति धर्म साधना करना चाहेगा, उसके व्यावहारिक जीवन में संतुलन की आव यकता होगी। इसके विपरीत व्यावहारिक जीवन में संतुलन न रहने पर मन तनाव युक्त और दूशित भावों से भरा रहेगा और साधना में मन नहीं लगेगा। इसीलिए भगवान सदा ाव ने व्यावहारिक जीवन की चीजों में से ऐसी तीन चीजों को चुन लिया, जिनकी सामान्य जीवन में भी उपयोगिता है और जो आध्यात्मिक जीवन में भी हमारी सहायता करती है। यह संगीत ही है।

(पूर्व राश्ट्रपति) डॉ राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार इतिहास से विरासत में हमें भारतीय संगीत जैसी अमूल्य निधि मिली है। अन्य दे ों के संगीतों की अपेक्षा इसमें जो वि ाश्टता है, वह मान्यताओं के कारण है। जो संगीत के संबंध में हमारे पूर्वजों की थी। भारत में संगीत क्षणिक आमोद प्रमोद व अतृप्त तृश्णा की वस्तु ना होकर समस्त ब्रह्मांड अथवा व्यक्ति जगत में एकरूपता का आभास है चिरानंद प्रदान करने वाली

अध्यात्मिक साधना है और सांसारिक दुखों से मुक्ति प्रदान करने और ब्रह्म तक मानव को ले जाने वाला मार्ग हैं। संगीत का विकास इन्हीं आद र्ा के अनुकूल किया था उन्होंने संगीत और जीवन में किसी प्रकार की खाई ना खोदी होगी न किसी प्रकार की दीवार खड़ी की। यह कहना अनुचित ना होगा कि उन्हें संगीत को हमारे जीवन में इस प्रकार बुन दिया की सहस्त्र भाताब्दियों के के प चात भी वह उसका अभिन्न अंग बना हुआ है संसार में संभवत ऐसी अन्य कोई दे ा नही हैं जहां संगीत इतने पुराने युग से जनजीवन में इतना व्याप्त हो जितना कि वह भारत में सहस्त्रों वर्शो से रहा है। संसार की सब जातियों की अपेक्षा भारत वासियों के कही अधिक संगीत प्रेमी होने की बात का जिक्र मैगस्थनीज ने भी कि है ईसा मसीह पूर्व 150 लगभग लिखे लगभग लिखे गए "इंडिका" नामक अपने ग्रंथ में आर्यन के मैगस्थनीज का यह कथन उद्धृत किया है कि सब जातियों की अपेक्षा भारतीया लोग संगीत के अधिक प्रेमी है सहस्त्रों वर्शो से हमारे घरेलू और बुनियदी जीवन में लगभग सभी काम किसी न किसी प्रकार संगीत से आरंभ होते है।

जन्म से लेकर मृत्यु तक या संगीत हमारे साथ बना रहता है जिस दिन बालक संसार में अपनी आखे खोलता है उस दिन से ही संगीत से भी उसका परिचय हो जाता है नामांकरण, छेदन, विवाह आदि में तो संगीत होता ही है ऐसा कोई तीज त्यौहार नही होता ऐसा कोई पर्व संस्कार नही होता है जिसमें संगीत ना हों। घर में ही क्यों हमारे यहां खेत में और चौपाल में चक्की चलाने और धान कूटने में भी संगीत चलता ही रहता है अतः यह कहना अनुप्रयुक्त ना होगा कि हमारे जनजीवन के उल्लास को प्रकट करने का तो या प्रभावी साधन है ही साथ ही उसको गतिमान बनाने का भी अस्त्र है संगीत आपको रचनात्मक कार्य में अग्रसर होने की सामूहिक स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करता है और उनको वह सामूहिक भाक्ति देता है जो उन्हें उन कामों के करने कें लिए योग्य बना देती है जो भी अकेले या समूह में संगीत की प्रेरणा के बिना ना कर पाते। भारत की सांस्कृतिक एं आध्यात्मिक विकास में संगीत का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

प्रख्यात सिात वादक पंडित रवि ंकर जी के मतानुसार :– हमारे संगीत का उच्चतम लक्ष्य सामग्र वि व के सार को अभिव्यक्त करना है, जिसे वह प्रतिबिम्ब करता है। राग उन माध्यमों में से है जिनके द्वारा यह सार समझा या समझाया जा सकता है इस प्रकार मनुश्य संगीत के द्वारा ई वर तक पहुंच सकता है। संगीत कला व साहित्य मनुश्य को लैकिक एवं भौतिक वृत्तियों से निवृति दिलाकर उच्च आध्यात्मिक ऊँचाईयों तक ले जाने की क्षमता रखते हैं, जो की मुनश्य को आत्म ुद्धि में बेहद सहायक है।

निश्कर्श :– इस प्रकार उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि भारतीय संगीत एक ऐसी अध्यात्मिक भाक्ति है, जहां संपूर्ण सृश्टि ने ना केवल भौतिक बल्कि आत्म साक्षत्कारी सुखों की भी अनुभूति की है। इस मृत्यु ील संसार में हमारे इतने दीर्घ जीवन की यही रहस्य है कि हमने आध्यात्मिकता का दामन नहीं छोड़ा है। जब मनुश्य अपने मन को एकाग्रचित कर संगीत साधना में लीन होता है तभी वह आध्यात्मिक प्रक्रिया से जुड़ जाता है। संगीत का वास्तविक संबध व आधार ध्यान, स्वर, साधना एवं भक्ति है, और यही ध्यान, साधना एवं भक्ति का व्यवहार आध्यात्मिकता को भारतीय संगीत से जोड़ता है। अतः यह स्पश्ट है कि कल से आज तक आध्यात्मिकता एवं भारतीय संगीत का संबंध रहा है, और युगों युगांतर तक रहेगा।

संदर्भ ग्रंथसूचीः–

1. अनहद की झनकार– संगीतः आध्यात्मिक साधना का सुगम मार्ग– डॉ सत्येन्द्र कुमार चौधरी
2. आत्मबोध के आयामः भारतीय संगीत में अनाहतनाद। – स्मृति भार्मा
3. इंटरनेट।